कथा सरिता

एकता का आधार

गौतम बुद्ध के समय बौद्ध विहारों की व्यवस्था के लिए सूत्राचार्य (भिक्षुओं के वचनों को कंठस्थ करने वाले) एवं शीलाचार्य (भिक्षुओं के लिए निर्धारित पंचशील व दशशीलों के विशेषज्ञ आचार्य) होते थे। एक बार गोशिरा विहार के एक सूत्राचार्य हाथ धोने का पात्र साफ करना भूल गए। इस पर एक शीलाचार्य ने आपत्ति जताई। अहंकारवश सूत्राचार्य ने तर्क दिया कि जान-बूझकर पात्र अस्वच्छ नहीं छोड़ा था, अत: दोषी नहीं हूं। शीलाचार्य ने गलती मानने के लिए जोर दिया तो सभी भिक्षुओं में विवाद छिड़ गया। जब बात बुद्ध तक पहुंची तो उन्होंने दोनों को समझाते हुए कहा, अपने दृष्टिकोण से बंधने के बजाय दूसरों के दृष्टिकोण को समझकर मध्य मार्ग अपनाना चाहिए, ताकि संघ में शांति व एकता रहे। हालांकि दोनों पक्षों का अहंकार चरम पर था, इसलिए बुद्ध की बात किसी ने नहीं सुनी। तब बुद्ध एकांतवास के लिए रक्षित वन चले गए। जब एक साल, चार महीने बाद बुद्ध लौटे तो उनके प्रिय शिष्य आनंद ने विवाद करने वाले सूत्राचार्य व शीलाचार्य से बात की। तब तक दोनों अपनी गलती मान चुके थे। अत: सूत्राचार्य ने शीलाचार्य को नमन कर कहा- मैंने एक शील का उल्लंघन किया है। मुझे क्षमा करें। शीलाचार्य ने प्रत्युत्तर में कहा- मुझमें विनम्रता की कमी थी। मेरा हार्दिक खेद स्वीकार करें।

तब बुद्ध ने कहा, 'क्रोध और अहंकार से साधना भंग होती है और संघ में विभाजन होता है। स्नेह और एकता से रहेंगे तो ही हम लक्ष्य की उपलब्धि कर पाएंगे, इसलिए परिवार हो या संगठन, अहंकार से दूर रहकर निष्पक्ष भाव से संचालन करने पर ही अच्छे व सुखद परिणाम मिलते हैं।

नई दिल्ली -खानपुर। बाहा समुदाय के ट्रस्टी डॉ.ए.के.मर्चेन्ट को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.आशा।

कोल्हापुर। फिल्म अभिनेता अशोक सरफ को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.शिवानी, ब्र.कु.गीता व ब्र.कु.रंगराव।

स्नेह

एक महिला के पति की नौकरी किसी अन्य शहर में थी। वे कभी-कभार ही आ पाते थे। महिला अकेली ही गांव में रहती थी। घर में कोई और नहीं था। अपने स्वभाव से वह बहुत उदार व स्नेहपूर्ण थी। पड़ोसियों की सदा मदद करती और कभी किसी का दिल नहीं दुखाती। चूंकि वह अधिकतर अकेली ही रहती थी, इसलिए एक चोर की निगाह काफी दिनों से उसके घर पर थी। एक दिन अवसर पाकर चोर घर में घुसा और महिला को छुरा दिखाते हुए कहा, 'यदि तुमने शोर मचाया तो मैं तुम्हें मार डालूंगा। बेहतर यही होगा कि तुम चुप रहो और मुझे जो ले जाना है, वह ले जाने दो।' महिला न चिल्लाई, न घबराई। वह बड़ी शांति से चोर की बात सुनती रही और फिर बोली, मैं शोर नहीं मचाऊंगी। तुम चोरी करने मेरे घर आए, इसका मतलब ही यह है भैया कि तुम्हें मुझसे अधिक इन वस्तुओं की आवश्यकता है। तुम्हें जो चाहिए, खुशी से ले जाओ। मैं तुम्हारे इस कार्य में सहायता करूंगी। मुझे जब इन वस्तुओं की जरूरत होगी तो भगवान मेरे लिए व्यवस्था करेगा।' महिला की बातें सुनकर चोर के हाथ से छुरा गिर पड़ा और वह सजल नेत्रों से बिना कुछ कहे वहां से चला गया।

अगले दिन महिला को एक पत्र मिला, जिसमें लिखा था, 'बहन! मैं चोर हूं, बुरा आदमी हूं। मुझे अब तक घृणा और अपशब्द ही मिले, जिससे मेरा दिल पत्थर के समान कठोर हो गया। किंतु तुम पहली हो, जिसने मुझे प्रेम दिया और मैं रास्ता बदलने के लिए बाध्य हो गया। आज से मैं चोरी करना छोड़ रहा हूं।' स्नेह की सरसता दुष्टता को खत्म कर देती है। स्नेह भाव से जटिल काम भी सरल हो जाते हैं।

फिरोजपुर सिटी। एसएसपी वीरेन्द्र पाल सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.कृष्णा व ब्र.कु.संगीता।

व्यवहारिक ज्ञान

एक संत जंगल में बने अपने आश्रम में आठ-दस शिष्यों के साथ भगवद् भजन में लीन रहते और सदुपदेश देते थे। एक दिन उनके किसी शिष्य ने दुनिया में घूमकर ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की। इसे उचित मानकर उन्होंने सभी शिष्यों से कहा, 'जाओ, तुम सभी दुनिया में जहां चाहो घूम आओ। अपना मन-मस्तिष्क खुला रखकर हर जगह से जितना ज्ञान अर्जित कर सकते हो, करना।'

लगभग दो वर्ष की अवधि में एक-एक कर वे सभी लौटे और अपने अनुभव संत को सुनाए। एक शिष्य को चुप देखकर संत ने पूछा, 'तुम क्या सीखकर आए हो?' वह बोला, 'मैंने तो कुछ नहीं सीखा।' संत को उसका उत्तर सुनकर हैरानी हुई, किंतु वे कुछ नहीं बोले। सभी शिष्यों ने फिर से आश्रम में अपनी-अपनी जिम्मेदारी संभाल ली। एक दिन वही शिष्य संत के पैर दबा रहा था। तभी उनसे मिलने एक ख्यात महात्मा आए। महात्मा ने ज्ञान की बड़ी-बड़ी बातें कहीं और चले गए। उनके जाने के बाद शिष्य बोला, 'मंदिर तो अच्छा है, किंतु भीतर भगवान की मूर्ति नहीं है।' संत समझ गए कि यह टिप्पणी महात्मा की कोरी ज्ञानपरक बातों पर की गई है। एक बार संत के कक्ष में एक मधुमक्खी घुस आई और द्वार खुला होने पर भी निकलने के लिए दीवारों पर टकराने लगी। तब वहीं मौजूद वह शिष्य बोला, 'जिधर से आई है, उधर ही जा। द्वार वहीं है।' विद्वान संत ने आत्मा-परमात्मा को केंद्र में रखकर कही गई इस बात की गहराई को समझ लिया। वे समझ गए कि उनका यह शिष्य कोरा ज्ञान सीखकर नहीं आया है, बल्कि स्वयं में धारण करके आया है। पढ़कर या सुनकर अर्जित किया गया ज्ञान तभी पूर्ण माना जाता है, जबकि व्यवहार के धरातल पर उसका उचित उपयोग हो।

गडचिरोली। जिला परिषद अध्यक्षा भाग्यश्री आत्राम को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.नलिनी।

ब्र.कु.सुधा दीदी को दी भावभीनी श्रद्धांजलि

बुरहानपुर। ब्र.कु.सुधा दीदी का जन्म लाहौर में दिनांक 18-7-1942 को एक धार्मिक परिवार में हुआ। 10 वर्ष की आयु से ही दिल्ली कमला नगर से ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त किया। शुरू से ही मम्मा-बाबा से अटूट प्यार था। ईश्वरीय सेवाओं में रूचि होने के कारण भिन्न-भिन्न स्थानों पर अथक सेवा की। शुरू से ही बहुत शांत स्वभाव,मधुर भाषी थी। हरेक को सन्तुष्ट करती थी। उनकी निर्णय व परखने की शक्ति बहुत अच्छी थी, कोई भी कार्य जिम्मेदारी से करती थी, इस कारण दीदी मनमोहिनी ने उन्हें बुराहनपुर सेवार्थ भेजा था और 40 वर्षों से वहाँ पर रहकर महाराष्ट्र के विभिन्न स्थानों पर सेवाएं दी तथा पचास से भी अधिक सेवाकेन्द्रों की स्थापना की।

दिनांक 29-8-13 दिन गुरूवार दोपहर को अपनी पुरानी देह का त्याग कर अव्यक्त बापदादा की गोद ली। मधुबन से दादी जानकी,दादी हृदयमोहिनी जी,ब्र.कु.निर्वैर ने चंदन की माला भेजकर श्रद्धांजलि अर्पित की। म.प्र. की शिक्षा मंत्री अर्चना चिटनीस ने बुरहानपुर सेवाकेंद्र पर आकर फूलमाला अर्पित कर श्रद्धांजलि दी,महाराष्ट्र जोन इंचार्ज ब्र.कु.संतोष ने भी फूलमाला अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। पूर्व केन्द्रिय मंत्री अरूण यादव, महामंडलेश्वर श्री जनार्दन महाराज(फैजपुर) तथा अनेक स्थानों से आये 5000 से भी अधिक ब्रह्मावत्सों ने फूल अर्पित कर अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

माउण्ट आबू से ब्र.कु.मृत्युंजय, ब्र.कु.भरत, ब्र.कु.जीतू, ब्र.कु.उमाकांत, ब्र.कु.मुरली, ब्र.कु.दिलीप ने भी श्रद्धांजलि अर्पित की। बिहार से ब्र.कु.रानी,ब्र.कु.मंगला,दिल्ली से उनके छोटे भाई व मधुबन से आए भाईयों ने ओम ध्वनि कर मुखाग्नि दी।

कोटद्वार। आर.टी.ओ. अनिता चौहान को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.ज्योति।

मुगरा बादशाहपुर। विधायक सीमा द्विवेदी रक्षासूत्र बंधवाने के पश्चात ब्र.कु.मनोरमा को रक्षासूत्र बांधते हुए। साथ हैं ब्र.कु.अनिता।

कमालगंज। ब्लाक प्रमुख राशिद जमाल सिद्दिकी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.उषा व ब्र.कु.सुमन।